जयप्रकाश नारायण का सर्वोदय चिंतन

संगीता कुमारी एवं रीना कुमारी

शोध सार

भारत की राजनीति के पुर्ननिर्माण के लिए वे राज्य से अलग रहकर समाजवाद को विकसित करने की संभावनाओं को खजते रहे। स्वेछा से किए गए प्रयत्नों द्धारा समाजवादी जीवन के एक प्रकार को जिसे उन्होंने लोगों का समाजवाद का अथवा स्वेछा से स्वीकृत समाजवाद का यानी सर्वोदय का नाम दिया था। जयप्रकश नारायण ने सन् 1952 में सर्वोदय के तत्वावधान को स्वीकार किया। समाजवाद की स्थापना सभी देशों में सामान्य रुप से राज्य शक्ति द्धारा होती है, जबकि सर्वोदय का कार्यक्रम है लोगों के विचार में भी वैसा ही परिवर्त्तन लाने के लिए लोक शिक्षण करना। यह कार्यक्रम बहुत व्यापक है और लोक शक्ति पर आधारित है।

Keyword: **सर्वोदय, मार्क्सवाद,समाजवाद, लोकशक्ति, स्वेच्छा, पुर्ननिर्माण।**

मार्क्सवाद और समाजवाद के विषय में जयप्रकश नारायण के भ्रम का आरंभ तीसरे दशक में कम्युनिस्टों के साथ कांग्रेस-समाजवादी पक्ष का अनुभव स्टालिन के नेतृत्व में सोवियत रूस का विकास और खुद कांग्रेस के कारण हुआ। लेकिन जयप्रकाश नारायण ने 1950 के आसपास नैतिक कारणों से इन दोनों विचार धाराओं का परित्याग कर दिया।

भारत की राजनीति के पुनर्निर्माण के लिए वे राज्य से अलग रहकर समाजवाद को विकसित करने की संभावनाओं को खोजते रहे। स्वेच्छा से किए गए प्रयत्नों द्वारा समाजवादी जीवन के एक प्रकार को, जिसे उन्होंने लोगों का समाजवाद का अथवा स्वेच्छा से स्वीकृत समाजवाद का यानी सर्वोदय का नाम दिया था। जयप्रकाश नारायण ने सन् 1952 में सर्वोदय के तत्वावधान को स्वीकार किया। एक नए समाज की रचना के लिए मार्क्सवाद और समाजवादी उपायो- संबंधी अपने विश्वास का उन्होंने विधिवत् त्याग किया।

समाजवाद की स्थापना सभी देशों में सामान्य रूप से राज्य शक्ति द्वारा होती है, जबकि सर्वोदय का कार्यक्रम है लोगों के विचार में परिवर्तन लाकर उनके व्यवहारों में भी वैसा ही परिवर्तन लाने के लिए लोक शिक्षण करना। यह कार्यक्रम बहुत व्यापक है और लोक शक्ति पर आधारित है।

स्वराज्य प्राप्ति और गांधीजी की हत्या इन दो घटनाओं ने जयप्रकाशजी को कुछ नया चिन्तन करने के लिए प्रेरित किया। जयप्रकाश जी बराबर सोचा करते थे कि बिना किसी शस्त्र विद्रोह के हम अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सके और अंग्रेज सता सौप कर चले गए। इस हकीकत ने जयप्रकाश जी के चित पर एक अमिट छाप छोड़ा। बाद में जयप्रकाश जी ने इन शब्दों में व्याख्यान किया ''इतिहास ने मेरी मान्यता को गलत साबित कर दिया। यह चीज मेरे मन पर अपनी गहरी छाप छोड़ दी। इसके कारण मेरे चिन्तन की सारी दिशा ही बदल गई।

शोध छात्र, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

स्वराज्य के आंगन में देश के चोटी के राजनीतिक नेताओं का रूख, कॉमी दंगों का दावानल, हिंसा का भीषण ताण्डव और गांधीजी का बलिदान, इन सब घटनाओं से विचलित होकर जयप्रकाश जी अपने दिल की गहराइयों में उतरते चले गए।

गांधीजी जीवन के अंतिम दिनों में नवसंस्करण की बात करने लगे थे। इसके लिए फरवरी 1948 के दिन गांधीजी की हत्या हो गई। आखिर यह सम्मेलन, 1948 में हुआ। उसमें खासतौर पर बिनोबा की प्रेरणा से सर्वोदय समाज और सर्व-सेवा संघ की स्थापना हुई। इसमें एक समिति गठित की गई। इस समिति द्वारा तैयार किए गए सर्वोदय प्लान पर कोई दो सौ रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं ने फिर इक्ट्ठा होकर विचार किया था। 30 जनवरी 1950 के दिन वह देश के सामने रखा गया। उस दिन प्रभावतीजी के साथ जयप्रकाश जी ने भी चरखे पर सूत काता। दोनों ने दिन भर उपवास भी रखा।

जयप्रकाश जी को यह सर्वोदय प्लान बहुत ही अच्छा लगा। अपने भाषणों, लेखों और बातचीत में वे इस प्लान का गहरा अध्ययन करने का अनुरोध करते रहे ''बुनियादी सामाजिक क्रांति'' के लिए यह एक ठोस कार्यक्रम है।

भारतीय दर्शन का आधार ही सबका कल्याण है तथा ''सर्वे भवन्तु सुखनिः, सर्वे सन्तु निरामयः, सर्वे भद्रानि पश्चन्तु, मा कश्चित् दुखभाग भवेत'' जैसे मूलमंत्र सदा संसार को इस बात का घ्यान दिलाते रहते हे कि संसार का कल्याण किसी वर्ग विशेष अथवा देश विशेष के कल्याण में नहीं, वरन सबके कल्याण में है।

बाईबिल की कहानी के आधार पर रस्किन ने अपनी पुस्तक 'अन्टु दिस लास्ट' लिखी और उससे प्रेरणा पाकर गांधीजी के हृदय में यह विचार आया कि मनुष्य जाति का कल्याण अर्थात् सर्वोदय हो।

सर्वोदय का शाब्दिक अर्थ है, इस विचारधारा का सबका उदय जो नाम इस विचारधारा को गांधीजी ने दिया है, उसका बड़ा महत्व है, क्योंकि इसके द्वारा समाजवाद के एक ऐसे रूप का प्रतिपादन किया गया है, जो उसके अन्य रूपों से भिन्न व उच्चकोटि का है। समाजवाद के विविध रूप सम्पूर्ण समाज के हित की बात करता है, पर वस्तुतः वर्ग हित को ही सम्पूर्ण समाज का हित मान लेते हैं। समाजवादी समाज स्थापना को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे सभी यह प्रतिपादित करते हैं कि समाज से उस वर्ग की समाप्ति होनी चाहिए, जिसे सम्पन्न कहा जाता है, यद्यपि इनमें कुछ उसे हिंसापूर्ण क्रांति के द्वारा समाप्त करने की बात कहते हैं पर सर्वोदयी समाजवाद इन दोनों ही प्रकार के समाजवादों से भिन्न व उच्चकोटि का है। उसका उद्देश्य में उनका भी उदय सम्मिलित है, जिन्हें समाजवाद के अन्य रूप सम्पन्न वर्ग को मानकर समाप्त करने की बात करता है। हम अधिकतम संख्या के अधिकतम हित से ही संतुष्ट नही है। हम उँचे व नीचे, सबल व निर्बल, विद्वान व मूर्ख सभी के हित से ही संतुष्ट हो सकते है। सर्वोदय शब्द से इस उच्च तथा सर्वव्यापी भावना का बोध होता है।

बिनोवा जी के शब्दों में सर्वोदयी विचारधारा के अनुसार धनी लोग बहुत पहले से गिरे हुए है, और निर्धन लोग कभी उठे ही नहीं है। परिणाम यह है कि दोनों को ही उठाना है। सर्वोदय के अनुयायियों के अनुसार जो धनीमानी है, वे नैतिक एवं आघ्यात्मिक दृष्टि से गिरे हुए है, क्योंकि उनका धनीमानीपन दूसरों के शोषण पर आधारित है। अतः यदि स्वेच्छा से ये अपनी आवश्यकता से अधिक सम्पति का

त्याग कर सकें, तो उनका नैतिक उत्थान होगा। दूसरी ओर जो निर्धन व शोषित लोग है, उनके लिए रोटी कपड़े की समस्या की पूर्ति ही नैतिकता, आध्यात्मिकता आदि सब कुछ है। अतः यदि उनकी इस समस्या का समाधान हो सके, तो उन्हें भी नैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से उपर उठने का अवसर प्राप्त होगा। यही कारण है कि सर्वोदय निर्धन व धनी सभी के उदय की बात कहता है। सर्वोदयी विचारधारा के अनुसार निर्धनों का उदय भौतिक व धनिकों का उदय नैतिक होना है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सर्वोदयी विचारधारा का आधार एक वर्ग का उदय न होकर सभी का उदय है। सबका उदय किसी एक देश अथवा कुछ देशों में हो जाये, इससे भी सर्वोदय का आदर्श पूरा हुआ नहीं कहा जा सकता। उसका आदर्श केवल तभी पूरा हुआ माना जा सकता है, जब सारे विश्व में सबका उदय हो।

काका कालेलकर ने गांधीजी द्वारा लिखित 'सर्वोदय' के अनुवाद के आमुख में ऐसे ही विचार व्यक्त किये है। उन्होंने लिखा है कि 'रस्किन ने जो कुछ भी लिखा, सारी दुनिया के लिए लिखा, लेकिन गांधीजी ही उसके अनुसार चल सके। गांधीजी का विश्वास था कि बाकी देश उसके अनुसार चले या न चले, हिन्दुस्तान तो चलेगी ही और अगर एक भी राष्ट्र नीति की राह पर चलेगा तो उसका असर सारे मानव जाति पर अवश्य ही होगी।

सर्वोदय का पहला आधार इन्द्रिय निग्रह है। व्यक्ति का व्यक्तित्व ऐसी वस्तु है जिससे व्यक्ति का संबंध जन्म से ही होता है। सर्वोदयी विचारधारा की मान्यता है कि यदि सभी व्यक्ति स्वयं ही अपनी इन्द्रियों पर संयम रखे, तो सबका कल्याण स्वतः ही होगा।

सर्वोदय का दूसरा आधार नये समाज का निर्माण है। दूसरी वस्तु जिससे व्यक्ति जन्म से ही संबंधित है, समाज है। अतः सब व्यक्तियों का कल्याण हो सके, इसके लिये यह आवश्यक है कि समाज का नव निर्माण सर्वोदयी दृष्टिकोण से हो।

सर्वोदय का तीसरा आधार व्यक्ति का संबंध सृष्टि के साथ आवश्यक रूप से होना चाहिए। सृष्टि उसी प्रकार सब का पोषण करती है, जिस प्रकार माता अपनी संतान का पोषण करती है। यदि सभी सृष्टि की सेवा करे अर्थात् सभी अपनी पूरी शक्ति से कार्य करे तो जनसंख्या की कभी कोई समस्या नहीं बन सकती है। विनोबाजी के शब्दों में सर्वोदय का यह सिद्धान्त है कि सृष्टि में जो प्राणी और जन्तु है उनके पोषण का इन्तजाम सृष्टि में ही है। लेकिन सृष्टि की सेवा के लिए हमें भगवान ने जो हाथ लिए है, उनका हमें पूरा उपयोग करना है। सभी कुछ न कुछ समय के लिए खेती का कार्य अवश्य करें, जिससे समाज को भोजन की कमी व जनसंख्या की समस्या का सामना न करना पड़े। विनोबाजी ने इस संबंध में यहाँ तक कहा है कि हमारा प्रधानमंत्री भी चार घंटे खेती करेगा और फिर चार घंटे दूसरा काम करेगा। सर्वोदयी विचारधारा की मान्यता इस प्रकार यह है कि यदि इस प्रकार व्यक्ति व सृष्टि का संबंध रहेगा तो कभी भी भोजन की कमी नहीं रहेगी।

सृष्टि के साथ संबंध बनाये रखने के नाम पर सर्वोदयी विचारधारा का प्रतिपादन यह नहीं है कि हम रूढ़िवादी हो जायें और आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति की ओर आँखे बन्द कर ले। सर्वोदयी विचारधारा आधुनिकता के प्रति विमुख नहीं है। विज्ञान के संबंध में कहा है कि हम चाहते है कि विज्ञान खूब बढ़े, लेकिन हम यह भी चाहते है कि उसका ठीक ढ़ंग से उपयोग करने की बुद्धि हम में हो। अग्नि का उपयोग हम जरूर कर सकते हैं, लेकिन अग्नि का उपयोग रसोई बनाने में किया जाय, किसी के मकान में

आग लगाने के लिये न किया जाय। विज्ञान की शादी अगर हिंसा के साथ होगी, तो मानव का सर्वनाश होगा। यंत्र हमारे हाथ में रहें, हम यंत्र के हाथ में नहीं। केवल बड़े-बड़े प्रसादों या बड़े-बड़े कार्यालयों या बड़े-बड़े कारखानों तक ही अपनी जीवनचर्या को सीमित रखने के स्थान पर यदि व्यक्ति अपना संबंध प्रकृति की सृष्टि से भी रखेगा तो आरोग्य लाभ होगा। मनुष्य को सबसे ज्यादा जरूरत आकाश की है। दूसरी जरूरत हवा की है। हवा का खूब सेवन करना चाहिए, उससे पोषण मिलता है। तीसरी जरूरत सूर्य-प्रकाश की है। चौथी जरूरत पानी की है मनुष्य को कम से कम जरूरत अन्न की है। इसलिये कम खाना चाहिये। मानव जीवन की योजना में हवा, पानी और आकाश खूब मिलना चाहिए । इस तरह से सृष्टि से संबंध रख कर यह क्रम घ्यान में लिया जायेगा तो मनुष्य का आरोग्य उत्तम रहेगा।

सर्वोदय का चौथा आधार सर्वोदयी विचारधारा के अनुसार राज्य व सरकार का क्षय है। सरकार कोई नैसर्गिक वस्तु नहीं है बनावटी चीज है। लेकिन आज हालत यह हो रही है कि जहाँ मनुष्य का जन्म हुआ वहाँ उस पर सरकार का अंकुश आ जाता है सरकार की शक्ति इतनी व्यापक हो गई है कि जीवन के सभी अंगों से उसका स्पर्श होता है।

सर्वोदयी विचारधारा इन्द्रिय संयम, पारस्परिक हितों के सामंजस्य पर आधारित नये समाज की रचना, प्रकृति के प्रति नये दृष्टिकोण तथा राज्य के क्षय को सर्वोदयी आधार मानती है।

विकेन्द्रीकरण-सर्वोदयी एक ऐसे विकेन्द्रीकृत समाज की रचना चाहता है, जिसमें वर्ग विभेद न रहे और सभी नागरिक बिना किसी भेद भाव के अपनी आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक उन्नति कर सके।

संदर्भ गन्थ सूचीः

1. मरिस डुवरगेट-पोलिटिकल पार्टीज पृष्ठ 423-25 लन्दन, अंग्रेजी संस्करण 1954
2. एच बी मेयो : डेमोक्रेसी एण्ड माक्सिज्म, पृष्ठ 256, आक्स्फोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1944
3. टमेरिका पार्टी सिस्टम पृष्ठ संख्या-503
4. श्री प्यारेलाल : लास्ट पृष्ठ 577,नवजीवन, 1958
5. श्री प्यारेलाल : लास्ट पृष्ठ 576, नवजीवन 1958
6. श्री प्यारेलाल : लास्ट फेज, पृष्ठ 576
7. लार्ड बेवरीज : वालेटरी एक्सेन, पृष्ठ संख्या-10 लन्दन, 1949
8. दयाकृष्ण : रोडस इंटरनेशनल सेमिनार (1958) के लिए प्रस्तुत निबंध 'व्हॉट इज डिमोक्रेसी- पृष्ठ 2
9. दयाकृष्ण : रोडस इंटरनेशनल सेमिनार (1958) के लिए प्रस्तुत निबंध 'व्हॉट इज डिमोक्रेसी- पृष्ठ 8

♦ ♦ ♦